अव्यक्त इशारे

अन्तिम परीक्षाओं में पास होने के लिए परखने की शक्ति को बढ़ाओ

1) आगे चलकर अनेक प्रकार की परीक्षायें आयेंगी, उन परीक्षाओं में पास होने के लिए परखने की शक्ति चाहिए। अगर परख नहीं सकते हो कि यह किस प्रकार का विघ्न है! माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है, तो उन परीक्षाओं में फेल हो जायेंगे। अगर परख अच्छी होगी तो पास हो सकते हैं।
2) विघ्नों का सामना करने के लिये पहले चाहिए परखने की शक्ति फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति | जब निर्णय करेंगे यह माया है वा अयथार्थ है। फायदा है वा नुकसान? अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है! परखने के साथ जो समय पर ठीक निर्णय करते हैं उनमें सहनशक्ति स्वत: आ जाती है। जिनकी निर्णय शक्ति तेज होती है वह कभी हार नहीं खा सकते।
3) जब कोई भी परिस्थिति सामना करती है, उस समय क्यों हुआ, क्या हुआ... इस सोच में समय नहीं गंवाओ, प्रश्नों में मन को उलझाओ मत। सदा यही सोचो कि जो हुआ उसमें कल्याण भरा हुआ है, सेवा समाई हुई है। भल रूप सरकमस्टांस का है लेकिन समाई सर्विस है। ऐसा सोचने से और इस रूप से देखने से सदा अचल रहेंगे। मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति से परिस्थितियां चींटी समान अनुभव होंगी।
4) अब समय ऐसा आ रहा है जो परखने की शक्ति अति आवश्यकता है! जितनी परखने की शक्ति तीव्र होती जायेगी, उतना हर कार्य में सफलता भी मिलती रहेगी। पूरी परख ना होने कारण जो उसको चाहिए, जिस रूप से उनकी तकदीर जग सकती है वह प्राप्ति उनको नहीं होती है इसलिए सर्विस में सफलता कम मिलती है।
5) समय प्रमाण ज्ञान-योग के साथ-साथ अब परखने की ज्योतिष विद्या भी जाननी है। कोई भी व्यक्ति सामने आए तो आप एक सेकेण्ड में उनके तीनों कालों को परख लो । एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति, दृष्टि और भविष्य में कहाँ तक यह अपनी प्रालब्ध बना सकते हैं, यह जानने व परखने की शक्ति अभी और बढ़नी चाहिए।
6) परखने की शक्ति को बढ़ाने के लिए बुद्धि की लाइन बहुत स्वच्छ चाहिए। स्वच्छ बुद्धि तब बनेगी जब कोई भी संकल्प मर्यादा के विपरीत नहीं होगा। अमृतवेले से रात के सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल, स्मृति वृत्ति और दृष्टि भी सदा ही मर्यादा प्रमाण हो तब आपकी स्वच्छ बुद्धि स्वयं को व सर्व को सहज ही परख सकेगी। परखने के साथ अगर निर्णय करने वा निवारण करने की शक्ति ठीक होगी तो हर बात का सामना कर सकेंगे।
7) परखने की शक्ति को बढ़ाने के लिए दिल की सफाई चाहिए। साथ-साथ संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने और मोड़ने की पॉवर चाहिए। जिनके पास यह दोनों ही शक्तियां हैं, उनके बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी। इनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी, जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।
8) जब दुनिया में किसी भी कार्य अर्थ जाते हो और आसुरी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखना

पड़ता है, तो परखने की प्रैक्टिस होने से बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। इस परखने की प्रैक्टिस को छोटी बात नहीं समझना, इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, उनके वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को परखने से विजयी बन जायेंगे।

9) मास्टर त्रिकालदर्शी, ज्ञान-स्वरूप बन अपनी जन्मपत्री स्वयं ही चेक करो और अपने भविष्य को देखो। इससे आप अपनी राशि व दशा को व लकीरों को बदल सकते हो। परखने के बाद, चेक करने के बाद, फिर चेंज करने का साधन अपनाना। नॉलेज के साधनों द्वारा ही सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त कर सकेंगे।

10) परखने की शक्ति अगर कम है तो उनके पास हर बात में क्यों, क्या, कैसे.. क्वेश्चन मार्क बहुत होंगे। ड्रामा का फुल स्टॉप देना उनके लिए बड़ा मुश्किल होगा वे स्वयं ही क्यों, क्या कैसे की उलझन में होंगे। दूसरी बात वह कभी भी किसी को समीप आत्मा नहीं बना सकेंगे। सम्बन्ध में लायेंगे लेकिन समीप सम्बन्ध में नहीं ला सकेंगे।

11) आगे चलकर ईश्वरीय रूप से माया ऐसा सामने आयेगी जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी इसलिए परखने की शक्ति सदैव अविनाशी रखना। अगर परखने की शक्ति कम होगी तो ईश्वरीय मार्ग से भटक जायेंगे। ब्राह्मण कुल की जो मर्यादायें हैं उन मार्यादाओं का स्वरूप नहीं बन सकेंगे।

12) अगर कोई शान्ति का प्यासा है, उसको शान्ति मिल जाये तो क्या होगा? प्राप्ति से अविनाशी पुरुषार्थी बन जायेंगे। तो हर एक के मन के भाव को परखने से, समझने से थोड़े समय में सर्विस की सफलता बहुत दिखाई देगी। अभी पुरुषार्थी स्वरूप हो फिर सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

13) समय प्रमाण अपनी बुद्धि रूपी नेत्र को क्लीयर और केयरफल रखना और इनएडवान्स नॉलेजफुल होकर कर परखने का वरदान लेकर जाना, जिससे कभी भी माया से हार नहीं खायेंगे। जिसकी माया से हार नहीं होती, उनके ऊपर सुनने वाले और देखने वाले बलिहार जाते हैं।

14) चलते-चलते कई बच्चे माया के वश मनमत को भी श्रीमत समझने लग पड़ते हैं इसलिए परखने की शक्ति सदैव काम में लगाओ। परखने में भी अन्तर होने से अपने आपको नुकसान कर देते हो इसलिए कहाँ भी अगर स्वयं नहीं परख सकते हो तो जो श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त हैं उन्हों से सहयोग लो। वेरीफाय कराओ कि यह श्रीमत है वा मनमत है फिर प्रैक्टिकल में लाओ।

15) अपनी वृत्ति को भी परखने के लिए यह चेक करो कि वृत्ति का वायुमण्डल पर असर क्या है? वायुमण्डल अगर और दिखाई देता है तो समझना चाहिए अपनी वृत्ति में कमज़ोरी है। उस कमजोरी को मिटाना चाहिए। वृत्ति परिवर्तन होती है व्रत लेने से।

16) जैसे सोने को परखने के लिये कसौटी पर रखा जाता है, इससे मालूम हो जाता है कि सच्चा है वा झूठा है। ऐसे ही स्वयं को परखने व निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिये आपके सामने साकार बाप का हर कर्तव्य और हर चरित्र कसौटी है, जो भी कर्म करते हो, जो भी संकल्प

करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है, व्यर्थ है वा समर्थ है, तो इस कसौटी पर देखने के बाद जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा।

17) सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ है अपने आपको परखना व जानना। पहले बाप को परखेंगे तब जानेंगे या पहचान सकेंगे और जब पहचानेंगे तब बाप के समीप व समान बन सकेंगे। परखने की शक्ति है नम्बरवन। ज्ञान का आधार है पहले स्वयं को पहचानना फिर बाप को पहचानना अर्थात् परखना कि यह बाप का कर्तव्य चल रहा है, इसे ही नॉलेजफुल की स्टेज कहते है।

18) महावीर अर्थात् सदा मायाजीत। महावीर कभी माया से घबराते नहीं, चैलेंज करते हैं। किसी भी रूप में माया आवे, लेकिन परखने की शक्ति से माया को परखते हुए विजयी होंगे। माया को दूर से आते हुए परख लेंगे, जितनी परखने की शक्ति तेज होती जायेगी तो दूर से ही माया को परखकर भगा सकेंगे।

19) जिसमें सहनशीलता का गुण है, साक्षी बन ड्रामा की ढाल को पकड़ कर रखता है उसमें परखने वा निर्णय करने की शक्ति सहज आ जाती ता है जितनी आप में सहनशक्ति होगी उतना सर्वशक्तिमान की सर्वशक्तियां स्वतः प्राप्त होती रहेंगी। सहनशक्ति वाले जो भी शब्द बोलेंगे वह साधारण नहीं होगा और कर्म भी जो करेंगे वह भी उसके प्रमाण ही करेंगे।

20) बुद्धि की एकाग्रता से परखने की शक्ति आती है, इसके लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते।

21) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ। साइलेन्स की शक्ति हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी।

22) सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ है अपने आप को परखना व जानना। जब अपने को पहचानेंगे तब बाप के समीप व समान बन सकेंगे। परखने को ही कॉमन शब्दों में पहचान कहते हैं। बाप के कर्तव्य को पहचानना और यह ड्रामा जिस रीति से, जैसा चल रहा है, उसी के साथ-साथ मन की स्थिति चलती रहे, जरा भी हिले नहीं, ऐसे ड्रामा की पटरी पर सेकण्ड बाई सेकण्ड चलते रहना, यही है मन की एकाग्रता।

23) सदा सर्वशक्तिवान बाप के संग रहो तो कभी मुरजायेंगे नहीं। कनेक्शन ठीक हो तो आटोमेटिकली सर्वशक्तियों की करेन्ट आयेगी। जब सर्व शक्तियां मिलती रहेंगी तो सदा हर्षित रहेंगे। गम खत्म हो जायेगा। संगम का समय है खुशियों का, अगर ऐसे समय पर कोई गम करे तो बुरा लगेगा ना! इसलिए परखने की शक्ति धारण कर गम वा दुःख की दुनिया से किनारा कर लो।

24) मैं बाप समान सर्व शक्तियों का अधिकारी मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इस स्मृति को बार-बार रिवाइज़ और रियलाइज़ करो, फिर सदा मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करेंगे और पुरुषार्थ में कभी थकेंगे नहीं। सच्चे दिल से रियलाइज़ कर, कारण को परखकर फिर उसे निवारण का रूप देते हुए आगे बढ़ते चलो।

25) जो सामने आये, उनके नयनों से उन्हें परख सकते हो। उस समय उनके नयन, उनकी वृत्ति एक ही तरफ एकाग्र होगी, च उनके बोल भी वही निकलेंगे, उनकी स्थिति नशे वाली होगी। दृष्टि में सृष्टि कहा जाता है, तो आप उनकी दृष्टि से पूरी सृष्टि को जान सकते हो, इसके लिए सिर्फ अपनी बुद्धि को बहुत स्वच्छ और एकाग्र रखो। कभी भी किसी के बहकावे में नहीं आना।

26) वर्तमान समय अगर परखने की शक्ति कम होगी तो धोखे में आ जायेंगे क्योंकि ऐसी कई आत्मायें आपके सामने आयेंगी जो अन्दर एक और बाहर से दूसरी होंगी। परीक्षा लेने के लिए आयेंगी इसलिये ध्यान रखना है कि यह किसलिये आया है? उनकी वृत्ति क्या है? इसके लिए अपने लाइट की परसेन्टेज को बढ़ाओ। अपने को ला-मेकर समझकर हर कदम ला-फुल बनकर श्रीमत प्रमाण उठाओ, उसमें मन-मत मिक्स नहीं करो।

27) आप एक-एक मास्टर रचयिता हो। मास्टर रचयिता अपनी रचना से भी अपनी पावर को परख सकते हैं। जैसा बीज होता है वैसा ही फल निकलता है। अगर बीज पावरफुल नहीं होता है तो कहाँ-कहाँ फूल निकलेंगे, फल निकलेंगे लेकिन स्वीकार करने योग्य नहीं होंगे। अगर बीज पावरफुल नहीं है तो रचना भी जो पैदा होती है वह स्वीकार करने योग्य नहीं होती।

28) समय प्रति समय कई प्रकार के लोग, कई प्रकार की परीक्षायें आती रहती हैं, आगे चलकर और भी आयेंगी। ऐसे समय पर परखने की शक्ति चाहिए। हर प्रकार की परीक्षा में लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना, यह पाण्डवों का विशेष काम है। इसके लिए पाण्डवों को पहले अपनी रखवाली करनी है फिर चारों ओर की रखवाली करनी है।

29) हरेक रत्न एक दो से श्रेष्ठ है लेकिन फिर भी परखने की प्रैक्टिस जरूर चाहिए। इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को भी परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए आत्मिक स्थिति के साथ आपकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प न चलें। बुद्धि सदा एक की याद में, एक के ही कार्य में और एक रस स्थिति में हो। अपने व्यर्थ संकल्पों की मिक्सिंग न हो, तब ही जो जैसा है वैसा परख सकेंगे।

30) आपका जो वायदा है कि हम एक हैं, 'एक के हैं, एक के होकर रहेंगे! एक की ही मत पर चलेंगे, यह सदैव पक्का रखना। जितना आप अव्यक्त स्थिति में स्थित रहेंगे उतना माया के बहुरूपों को सहज परख कर अपने को सेफ कर सकेंगे। अव्यक्त स्थिति में रहने से हर कर्म में अलौकिकता का अनुभव होगा। हर कर्मेन्द्रिय से अतीद्धिय सुख की महसूसता होगी। चेहरे पर रूहानियत और अलौकिकता दिखाई देगी।